B- III
L- 37
MIH

* 1938 हरिपुरा अधिवेशन (गुजरात)

अध्यक्ष - सुभाष चन्द्र बोस

- भारत की आजादी में रियासतों की आजादी भी शामिल होगी।
- 1938 में राष्ट्रीय योजना समिति का गठन।
  ↳ अध्यक्ष - जवाहर लाल नेहरू

* 1939 में कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन (जबलपुर)

सुभाषचन्द्र बोस ने अध्यक्ष पद के चुनाव में पट्टाभि सीतारमैया को पराजित किया।

- सीतारमैया को गांधी जी का समर्थन था।
- सुभाषचन्द्र बोस पर कांग्रेसी नेताओं ने दबाव बनाया अतः उन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और इनके स्थान पर राजेन्द्र प्रसाद को अध्यक्ष बनाया गया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपंथ

समाजवाद / Socialism

मार्क्सवाद / Marxism

Left / वामपंथ

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

समाजवाद :-

श्रमिको एवं वंचित तबकों के लिए लोकतांत्रिक तरीके से सामाजिक, आर्थिक, न्याय पर बल देने वाली विचारधारा।

मार्क्सवाद :-

श्रमिकों एवं वंचित तबकों के उग्र तरीकों से सामाजिक आर्थिक, न्याय पर बल देने वाली विचारधारा। कार्लमार्क्स के कारण इसे मार्क्सवाद भी कहते हैं। इस विचार धारा का लक्ष्य है साम्यवाद की स्थापना। साम्यवाद अर्थात वर्ग-विहीन एवं राज्य विहीन समाज की स्थापना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

वामपंथ :-

उपर्युक्त विचारधारा के अनुयायी या कार्यकर्ता को वामपंथी कहा जाता है।

भारत मे वामपंथ के उदय की पृष्ठभूमि

- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध मे औद्योगीकरण के कारण विभिन्न शहरों में औद्योगिक श्रमिको का उदय एवं उनकी दयनीय दशा
- आधुनिक परिवहन के साधनो के विकास क्रम में बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता हुई और इनका भी शोषण किया गया।

Scanned by CamScanner

• भू-राजस्व नीतियों के कारण भूमिहीन किसानों की संख्या में वृद्धि हुई और छोटे किसानों एवं भूमिहीन किसानों का बड़े पैमाने पर शोषण भी हुआ।

• प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान मंहगाई में वृद्धि से भी आम लोगों में असंतोष बढ़ता गया।

• रूसी क्रान्ति की सफलता के पश्चात भारतीय बुद्धिजीवियों का भी मार्क्सवादी विचारधारा की तरफ आकर्षण बढ़ा।

• असहयोग आन्दोलन को वापस लिए जाने के पश्चात कुछ पढ़े लिखे भारतीयों ने भी इस विचारधारा को राष्ट्रीय संघर्ष को एक विकल्प के रूप में देखना प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे कांग्रेस के भीतर एवं कांग्रेस के बाहर इसका महत्व बढ़ता गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कांग्रेस में वामपंथ

क्यों :- उपरोक्त कारण

• नेहरू जी एवं सुभाषचन्द्र बोस का समाजवादी विचार-धारा की तरफ झुकाव एवं कांग्रेस में इनका बढ़ता महत्व

• 1933 में कांग्रेस के भीतर एक कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन किया गया।

Scanned by CamScanner

• भारतीय मार्क्सवादी पार्टी के सदस्य भी कांग्रेस के सदस्य थे। इस पार्टी के कारण भी कांग्रेस पर समाजवादी रास्ते पर चलने का दबाव बना रहता था।

प्रभाव :-

लक्ष्य :- पूर्ण स्वराज्य

कार्यक्रम :- सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भू-राजस्व कटौती का मुद्दा, नमक कर इत्यादि।

जैसे → -1931 का कराँची अधिवेशन
आर्थिक नीति, किसानों मजदूरों पर जो प्रस्ताव पारित हुआ।

-1936 में फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन

-1938 में राष्ट्रीय योजना समिति।

संगठन :-
3 बार नेहरू जी अध्यक्ष एवं 2 बार सुभाषचन्द्र बोस अध्यक्ष

आन्दोलन में भागीदारी :-
सविनय अवज्ञा आन्दोलन/भारत छोड़ो आन्दोलन के नेतृत्व एवं भागीदारी के स्तर पर वामपंथ का प्रभाव देखा गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

रणनीति पर प्रभाव :-

- सरकार से किसी भी प्रकार की बातचीत का विरोध या समझौते का विरोध के लिए कांग्रेस पर दबाव बनाया।
- संवैधानिक राजनीति का भी विरोध।
- राष्ट्रीय आन्दोलन या आन्दोलन के विरोधात्मक चरण को निरंतर जारी रखने पर बल।
- ब्रिटिश सरकार यदि खतरे में है तो इस अवसर का लाभ उठाया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय संघर्ष के लिए अपेक्षाकृत उग्र तरीकों को अपनाने पर बल जैसे - आधारभूत ढांचे को नुकसान पहुँचाया जाए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अन्य प्रभाव :-

- स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माण, आर्थिक नीति एवं विदेश नीति पर भी समाजवादियों का प्रभाव पड़ा।
- नोट :-

1933 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन पर नासिक जेल में चर्चा हुई
⇓
जयप्रकाश नरायण
ए. पटवर्द्धन
नरेन्द्र देव इत्यादि।

Scanned by CamScanner

• 1934 में पटना में इस पार्टी का गठन हुआ (संस्थापक - जयप्रकाश नारायण)

• 1934 में ही इसकी पहली बैठक बम्बे में आयोजित की गई (अध्यक्ष - सम्पूर्णानंद)

लक्ष्य एवं कार्यक्रम :

• राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करना।

• कांग्रेस के भीतर रहकर कार्य करना एवं कांग्रेस का समाजवादीकरण।

• किसानों मजदूरों एवं छात्रों के बीच सामाजिक आधार का विस्तार करना।

अन्य प्रमुख नेता :-

• राम मनोहर लोहिया, आसफ अली, मीनू मसानी आदि।

भारतीय मार्क्सवादी पार्टी :-

स्थापना - 1925 - कानपुर - सत्यभक्त

नोट :- 1925 से पूर्व एवं इसके पश्चात कुछ सक्रिय मार्क्सवादी

जैसे - एम. एन राय 1920 - ताशकंद - CPI पार्टी का गठन

श्रीपद अमृत डांगे - अखबार - "The Socialist"

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

- सिंगारवेलु चेट्टीयार - मद्रास में सक्रिय
- मुजफ्फर अहमद - बंगाल में सक्रिय - अखबार 'नवयुग'
- 1922-23 में पेशावर षड्यंत्र केस
- 1924 में कानपुर षड्यंत्र केस

भारतीय मार्क्सवादी पार्टी का उद्देश्य :-

- राजनीतिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक, आर्थिक न्याय की स्वतंत्रता।

कार्यक्रम :-

- श्रमिकों भूमिहीन किसानों छात्रों एवं महिलाओं के बीच जनाधार का विस्तार करना, इनसे संबंधित विभिन्न संगठनों की स्थापना, ट्रेड यूनियन पर पकड़ को मजबूत बनाना।
- कांग्रेस के भीतर रहकर कार्यकरना एवं कांग्रेस पर दबाव निर्मित करना। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के निर्देशों से संचालित होना
- 1928 में कलकत्ता में अखिल भारतीय किसान एवं मजदूर पार्टी का गठन।
- 1929 में मेरठ षडयंत्र केस
- 1930 में कांग्रेस से अलग होकर संघर्ष जारी रखा (कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के निर्देश पर)

Scanned by CamScanner

- 1930 में कांग्रेस से अलग होने के कारण इनकी स्थिति कमजोर हुई।
- 1936 में आर.पी. दत्त - ब्रेडले थीसिस के द्वारा पुनः कांग्रेस के साथ चलने पर बल दिया गया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध को प्रारम्भ में साम्राज्यवादी युद्ध कहा लेकिन जर्मनी या हिटलर ने 1941 में USSR पर आक्रमण किया तब इन्होने ब्रिटिश सरकार को समर्थन देना प्रारम्भ किया।
- भारत को कई भागों में विभाजित करने का समर्थन किया।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद का दूसरा चरण - 1924-34

क्यों :

सरकार की दमनकारी नीति :-

- असहयोग आन्दोलन को वापस लिए जाने से युवाओं में निराशा।
- क्रान्तिकारी गतिविधियों से संबंधित आधार भूत ढांचे की उपास्थिति।
- रूसी क्रान्ति की सफलता से भी युवाओं मे उत्साह।

प्रमुख घटनाएँ :-

- 1924 में कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना - चन्द्रशेखर आजाद
  सचीन्द्र सान्याल - किताब
  ↓
  बंदी जीवन

1925 में काकोरी ट्रेन डकैती कांड।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner